अध्याय 1

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ

आधुनिक सभ्य जीवन लम्बे एवं सतत विकास का परिणाम है। मानव समुदाय की प्रारम्भिक उपस्थिति से लेकर आज तक विश्व में अनेक सभ्यताओं का विकास एवं पतन हुआ है। इन सभ्यताओं का इतिहास एक तरह से मानवता का ही इतिहास है, इसलिए विश्व में विकसित इन प्राचीन सभ्यताओं का अध्ययन उन्नत सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक है। भारत हजारों वर्ष पूर्व से ही सभ्यता सम्पन्न राष्ट्र रहा है। भारत के साथ ही मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन, यूनान आदि प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ हैं।

भारत की सभ्यता

(क) सिन्धु सरस्वती सभ्यता

भारत विश्व के सबसे प्राचीन देशों में से एक है। इसका इतिहास, इसकी सभ्यता तथा इसकी संस्कृति बहुत प्राचीन है। पुरातात्विक आधारों पर पुरातत्वविदों ने यह पता लगा लिया है कि आज से लगभग पाँच–सात हजार वर्ष पहले भारत की प्रमुख नदियों जैसे सरस्वती, सिन्धु व उसकी सहायक नदियों के किनारों पर विचरण करने वाले मानव समूहों ने अपनी स्थाई बस्तियाँ बसा कर रहना आरंभ कर दिया था और इन बस्तियों में रहते हुए उन्होंने उन्नत सभ्यता व संस्कृति का विकास कर लिया था।

सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बत के कैलाश मानसरोवर के उत्तर में स्थित सेन्गेखबब, सिंहमुख व हिमनद से माना जाता है। सरस्वती नदी का उद्गम शिवालिक की पहाड़ियों से माना जाता है। यहाँ से यह आदिबद्री के पास मैदान में प्रवेश करती है। तथा यह दक्षिण–पश्चिम दिशा में बहती हुई कुरुक्षेत्र, घग्घर, हाकड़ा होती हुई हरियाणा के सिरसा स्थान से राजस्थान के नोहर में प्रवेश करती है। यहाँ से बीकानेर व जैसलमेर होती हुई, गुजरात के कच्छ के रन में प्रवेश कर प्रभासपत्तन के पास समुद्र में गिरती थी। वर्तमान में सरस्वती

नदी भौतिक रूप से अस्तित्व में नहीं है। भू–संरचना में परिवर्तन के कारण यह विलुप्त हो गई। वर्तमान में अस्तित्व में नहीं होने के कारण कतिपय विद्वान सरस्वती नदी को मात्र कल्पना मानते रहे हैं, लेकिन भू–उपग्रह द्वारा खींची गई तस्वीरों से सरस्वती नदी के बहाव क्षेत्र का अब पता लग गया है तथा अन्तः सलिला के रूप में आज भी यह प्रवाहित है। वैदिक साहित्य, रामायण व महाभारत में सरस्वती नदी के अस्तित्व के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध होते हैं। महाभारत युद्ध के समय कृष्ण के भाई बलराम ने सरस्वती नदी पर स्थित तीर्थों की यात्रा की थी, इसका विवरण प्राप्त होता है। राजस्थान के मरुप्रदेश में भी सरस्वती नदी के किनारे बसे कई नगरों के पुरातात्विक अवशेष आज भी विद्यमान हैं। कालीबंगा उनमे से एक है।

सिन्धु व सरस्वती नदी तथा इनकी सहायक नदियों के विस्तृत भू–भाग में विकसित मानव सभ्यता को सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के नाम से जाना जाता है। इस विकसित सभ्यता के बारे में पहले किसी को पता नहीं था कि भारत भी प्राचीन सभ्यता का प्रमुख केन्द्र रहा है। यह सभ्यता मिट्टी के टीलों में दबी हुई थी। मिट्टी के टीलों में दबी इस सभ्यता का काल कौन सा था? यह कब चरमोत्कर्ष पर थी और कब इसका अवसान हुआ? इस बारे में विद्वानों में मतैक्य नहीं है, लेकिन मोटे तौर से यह माना जाता है कि इस सिन्धु–सरस्वती सभ्यता का जन्म काफी पहले हुआ था और 3250 ईसा पूर्व तक यह पूर्ण रूप से विकसित हो गई थी। इसके बाद यह 3250 से 2750 ईसा पूर्व तक चरम विकास पर पहुँच गई थी। फिर 2750 ईसा पूर्व के बाद इस सभ्यता का अवसान आरंभ हुआ और 1500 ई. पूर्व तक आते–आते यह विलुप्त हो गई।

सिन्धु– सरस्वती सभ्यता का उत्खनन

सन् 1921 में रायबहादुर दयाराम साहनी ने अविभाजित भारत के पंजाब प्रान्त के मान्टगोमरी जिले में हड़प्पा नामक कस्बे के पास बहने वाली रावी नदी के बाएँ किनारे पर बने हुए एक पुरातात्विक टीले की खोज की। रायबहादुर दयाराम साहनी की तरह ही भारत के एक दूसरे पुरातत्ववेत्ता राखलदास बनर्जी ने सन् 1922 में अविभाजित भारत के सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में बहने वाली सिन्धु नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित मोहनजोदड़ो नामक टीले की खोज की। मोहनजोदड़ो का अर्थ होता है– 'मुर्दों का टीला।'' इस टीले की खुदाई से नौ बार बसने और नौ बार उजड़ने वाले एक व्यवस्थित नगर के अवशेष बाहर निकल आए। खोज के क्रम में ऑरलस्टाइन ने पूर्वकालीन बहावलपुर रियासत (अब पाकिस्तान में) हाकरा नदी, जो भारत की विलुप्त प्राचीन सरस्वती के विस्तार का क्षेत्र था, के सूखे रास्ते में ग्यारह पुरातात्विक स्थल खोज निकाले। सिन्धु सरस्वती सभ्यता से सम्बंधित अब तक 1500 स्थल खोजे गये हैं उनमें से 900 स्थल भारत में हैं तथा 600 स्थल पाकिस्तान में हैं। सन् 1947 में भारत के विभाजन के बाद सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के कुछ पुरातात्विक बड़े स्थल हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, गनवेरीवाला आदि पाकिस्तान के हिस्से में चले गए। कालीबंगा, राखीगढ़ी, धोलावीरा, लोथल, रंगपुर आदि बड़े पुरातात्विक स्थल भारत में हैं।

भारत के पुरातत्व विशेषज्ञों और इतिहासकारों ने स्वतंत्र भारत में सन् 1947 के बाद नये ढंग से कार्य प्रारम्भ किया। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात में सिन्धु घाटी और उसके पहले तथा समानान्तर प्रणाली पर विकसित होने वाली सरस्वती दृषद्वति नदी घाटी से सम्बन्धित कई स्थल खोज निकाले। सन् 1953 में अमलानन्द घोष ने राजस्थान के बीकानेर संभाग में लगभग 25 पुरातात्विक स्थलों की खोज की, जिसमें सबसे प्रमुख कालीबंगा है। पंजाब में रोपड़, बाड़ा, संघोल, गुजरात में रंगपुर, लोथल, रोजदी, हरियाणा में राखीगढ़ी, बनवाली, मीताथल आदि स्थानों पर सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के अवशेष मिले हैं।

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता की विशेषताएँ

(अ) नगर नियोजन– सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के विकसित और उन्नत स्तर को प्रकट करने वाले अवशेषों में सबसे महत्वपूर्ण अवशेष इस सभ्यता से सम्बंधित नगरों के हैं। ऐसे नगरावशेषों में हड़प्पा व मोहनजोदड़ो (दोनों अब पाकिस्तान में) कालीबंगा (राजस्थान) राखीगढ़ी (हरियाणा) तथा धोलावीरा लोथल (गुजरात) के अवशेष अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इन नगरों के अवशेषों से यह तथ्य भी उद्घाटित होता है कि सिन्धु–सरस्वती सभ्यता काल के भारतवासी पहले योजना बनाकर अपने नगरों और नगरों में निर्मित किए जाने वाले भवनों व आवासों का निर्माण करते थे। उनका भवन निर्माण कला सम्बंधी ज्ञान आधुनिक स्थापत्य अभियांत्रिकी (सिविल इंजीनियरिंग) के स्तर का

था।

आवास योजना का दृश्य

(i) नगर की आवास योजना– सिन्धु– सरस्वती सभ्यता के नगरों की सुव्यवस्थित सड़क प्रणाली के परिणामस्वरूप स्वतः नगरों की आवास योजना में एक व्यवस्था उत्पन्न हो गयी थी और नगर कई खण्डों और मोहल्लों में विभक्त होकर सुनियोजित स्वरूप में उभर गए थे। सामान्यतया प्रत्येक मकान में बीच में खुला आंगन रखा जाता था और आँगन के चारों तरफ कमरे बनाए जाते थे। लगभग सभी मकानों में पानी रखने के फिरोने या परेंडे, शौचालय और स्नानघर अलग से निर्मित होते थे।

(ii) सड़क व्यवस्थाः– सिन्धु–सरस्वती सभ्यता से सम्बद्ध नगरों की सड़कें पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण की तरफ सीधी समानान्तर निर्मित की गयी थी। सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थी, जहाँ चौराहे बने हुए थे। नगरों की मुख्य और बड़ी सड़कें सामान्यतया 10 मीटर, छोटी सड़कें 5 मीटर तथा गलियाँ एक से दो मीटर तक चौड़ी होती थी। सड़कों के किनारों पर स्थान–स्थान पर कूड़ा–कचरा डालने के लिये कूड़ादान रखे रहते थे।

(iii) नगर की सफाई, जल निकास प्रणाली और स्वच्छता का प्रबन्धः– सिन्धु–सरस्वती सभ्यता से सम्बंधित नगरों और नगरों के मकानों में स्वच्छता और सफाई की समुचित व्यवस्था देखने को मिलती है। नगरों की गलियों, सड़कों और मुख्य सड़कों पर बनी छोटी–बड़ी नालियों और गटरों से सहज में ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मकानों, मोहल्लों और पूरे नगर से गन्दा पानी बाहर निकालने की समुचित व्यवस्था थी। रोजमर्रा का कूड़ा –कचरा डालने के लिए सड़कों पर जगह–जगह कूड़ापात्र रखे जाते थे। सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के नगरों में निजी मकानों एवं नगरों में सार्वजनिक सफाई और स्वच्छता का जो प्रबन्ध नजर आता है, उससे यह साफ जाहिर होता है कि सिन्धु–सरस्वती सभ्यता काल में भारतवासियों का जीवन उच्च स्तर का था। वे शोभा और दिखावे के स्थान पर सुविधा और उपयोगिता को अधिक महत्व देते थे और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक थे।

(iv) विशेष निर्मितियाँः–सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के काल के विभिन्न नगरों की पुरातात्विक खुदाई में कुछ विशेष प्रकार की निर्मितियाँ, भवन और इमारतों के भग्नावशेष निकले हैं। इसमें नगर की गढ़ी वाले भाग में रक्षा प्राचीर, धातु पिघलाने के स्थान, भट्टियाँ, यज्ञ वेदियाँ, विशाल स्नानागार तथा विशाल अन्नागार आदि प्रमुख हैं। ये अवशेष सभ्यता की उन्नत अवस्था व वैज्ञानिकता का प्रमाण हैं।

(आ) सामाजिक जीवनः– सिन्धु–सरस्वती सभ्यता से सम्बंधित विभिन्न स्थानों पर खुदाई में ऐसी कई वस्तुएँ मिली हैं, जिनसे यह पता चलता है कि उस काल में समाज कई प्रकार के काम–धन्धे करने वाले लोगों से मिलकर बना था। व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार विभिन्न कार्य कर सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने में अपना योगदान देता था। धार्मिक, प्रशासनिक, चिकित्सा, सुरक्षा तथा उत्पादन प्रमुख कार्य थे।

(इ) परिवार व्यवस्था :–सिन्धु–सरस्वती सभ्यता काल के भवनों व मकानों की व्यवस्था के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि उनके समाज की प्रमुख इकाई परिवार था। बहुत अधिक संख्या में नारियों की मूर्तियाँ मिलने से यह माना जाता है कि सिन्धु –सरस्वती सभ्यता के काल के समाज और परिवार में नारी को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं थी। स्त्रियाँ चाँदी व तांबे के

आभूषण पहनती थी। ये लोग सूती वस्त्र पहनते थे। इन्हें अस्त्र–शस्त्र का ज्ञान भी था। मनोरंजन के साधनों में संगीत, नृत्य व शिकार प्रमुख थे। सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के लोग गेहूँ , जौ, चावल, दूध तथा मांसाहार का भोजन में उपयोग करते थे।

(ई) आर्थिक जीवन :–

(I) कृषि व पशुपालन– कालीबंगा में जुते हुए खेत के अवशेष मिले हैं। इससे लगता है कि सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के लोग खेती करते थे। वस्तुओं पर बने चित्रों के आधार पर पता चलता है कि सिन्धु–सरस्वती सभ्यता काल के लोग गेहूँ, जौ, चावल, तिल आदि की खेती करते थे। फल भी उगाते थे। कृषि के साथ पशुपालन सिन्धु–सरस्वती सभ्यता से सम्बद्ध लोगों का दूसरा मुख्य व्यवसाय था। पालतू पशुओं में गौ वंश का महत्व अधिक था।

(ii) व्यापार व वाणिज्य– यहाँ के निवासी तांबे व कांसे के बर्तन व औजार बनाने के साथ ही मिट्टी के बर्तन व मटके बनाने की कला में निपुण थे। चन्हुदड़ो तथा कालीबंगा की खुदाई में तोल के अनेक बाट मिले हैं। मोहनजोदड़ो में सीप की एक टूटी पटरी (स्केल) मिली है। ये अवशेष उनके उन्नत और विकसित व्यापारिक एवं गणित सम्बंधी ज्ञान के परिचायक हैं। गुजरात में लोथल नामक स्थान पर खुदाई में निकली एक गोदी (बन्दरगाह) के अवशेषों से पता चलता है कि यह समुद्री यातायात का प्रमुख केन्द्र था। मिस्र, सुमेर, सीरिया आदि दूर देशों से इनके घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध थे। भारत व मेसोपोटामिया की खुदाई से प्राप्त वस्तुओं में समानता का मिलना इस बात का प्रमाण है कि उनमें आपस में वस्तुओं का क्रय–विक्रय होता था। व्यापार की उन्नत व्यवस्था के कारण ही सिन्धु–सरस्वती सभ्यता को व्यापार प्रधान सभ्यता कहा जाता है।

(उ) धार्मिक जीवन:–सिन्धु–सरस्वती सभ्यता काल के लोग प्रमुख रूप से प्राकृतिक शक्तियों के उपासक थे तथा पृथ्वी, पीपल, नीम, जल, सूर्य, अग्नि आदि में देवी शक्ति मानकर उनकी उपासना करते थे। मूर्तियों और मुद्राओं तथा ताबीजों के विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि बलि प्रथा तथा जादू–टोना आदि अन्धविश्वास भी प्रचलित थे। लोथल, बनावली एवं राखीगढ़ी से प्राप्त अग्नि वेदिकाओं से लगता है कि वहाँ यज्ञों व अग्नि पूजा का प्रचलन रहा होगा। मूर्तियों की उपासना के लिए धूप जलाई जाती थी। मातृदेवी व शिव की उपासना भी की जाती थी। मृतक संस्कार शव को गाढ़कर या दाह–कर्म करके किया जाता था।

(ऊ) सभ्यता का अवसान– सिन्धु लिपि अभी सही ढंग से पढ़ी नहीं जा सकी है। अनुमान है कि इस सभ्यता का पतन प्राकृतिक कारणों से हुआ। वहाँ उस युग में रहने वाले निवासियों द्वारा परिश्रम से बनाए गए नगर भूपरिवर्तन से खण्डहर बन गए किन्तु उस अतीत में विकसित सभ्यता और संस्कृति के तत्त्व नष्ट नहीं हो सके। उनका आगे आने वाले युगों में भारतीय जन–जीवन में परोक्ष प्रभाव बना रहा । भारतीय संस्कृति के प्रारम्भिक चरणों के निर्माण में सिन्धु–सरस्वती सभ्यता का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

(ख) वैदिक सभ्यता

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के अवसान के पश्चात् भारत में वैदिक सभ्यता का उदय हुआ। विद्वानों ने इस वैदिक सभ्यता का विकास करने वाले जन समुदाय को आर्य कहकर पुकारा है तथा इन आर्यों को ही वैदिक सभ्यता का संस्थापक व प्रसारक बताया गया है। कतिपय विद्वानों ने यह भी कहा है कि ये आर्य भारत में बाहर से यथा– उत्तरी ध्रुव, मध्य एशिया, तिब्बत या यूरोप से आये, लेकिन वर्तमान पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह सिद्ध हो गया हैं कि आर्य मूलतः भारत के ही निवासी थे। इससे यह भी सिद्ध हैं कि वैदिक सभ्यता सिन्धु सरस्वती सभ्यता की निरन्तरता में ही विकसित हुई। इस वैदिक सभ्यता का वर्णन वैदिक साहित्य में विस्तार से आता है।

वस्तुतः आर्य किसी जाति का बोध कराने वाला शब्द नहीं है। यह तो गुणवाचक शब्द है जिसका अर्थ उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छे आचरण करने वाले अथवा सुसंस्कृत व्यक्ति है। शास्त्रों में बताया गया है कि जो व्यक्ति समाज द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करते हुए समुचित व्यवहार करता हो, विचार व वाणी में

शुद्धता व पवित्रता रखता हो, ऐसे अच्छे आचरण वाले व्यक्ति को आर्य कहा जाता है। वैदिक सभ्यता के जनक भारत के ऐसे ही सुसंस्कृत लोग थे। ये वे लोग थे अथवा वह मानव समुदाय था, जिसने तत्कालीन व्यवस्था व संस्कृति के उपयोगी पक्षों को अपनाकर अपने उन्नत रहन–सहन को विकसित किया। इस जन समूह को यदि आर्य शब्द का सम्बोधन दिया जाता है तो यह वास्तविक तथ्य उद्घाटित करता है। एक तथ्य यह भी है कि सिन्धु–सरस्वती सभ्यता का अवसान भले ही हो गया हो, किन्तु इस सभ्यता की अच्छाइयाँ सिन्धु–सरस्वती नदी क्षेत्र से बाहर भी प्रभावी थी, उन अच्छाइयों का ही विकास आगे चलकर वैदिक सभ्यता के रूप में हुआ।

वैदिक साहित्य – आर्य विद्वानों ने जिस साहित्य की रचना की वह 'वैदिक साहित्य' के नाम से विख्यात है। भारत में विकसित होने वाली वैदिक सभ्यता की जानकारी कराने वाले स्रोतों में प्रमुख स्थान वैदिक साहित्य का है। वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, आरण्यक, षट् वेदांग आदि वैदिक साहित्य के प्रमुख ग्रंथ है। वेद चार हैं–ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद। इस साहित्य के माध्यम से तत्कालीन वैदिक सभ्यता की विशेषताओं को इस स्वरूप में देखा जा सकता हैः–

वैदिक सभ्यता की विशेषताएँ

(अ) राजनैतिक संगठन– वैदिक काल के राजनैतिक जीवन का आधार परिवार थे। कई परिवारों से मिलकर ग्राम बनते थे। कई ग्रामों समूह का समूह 'जन' होता था। जन के नेता को 'गोप' 'रक्षक' या 'राजन्' कहते थे। राजन् का निर्वाचन प्रजा करती थी। शासन का सर्वोच्च अधिकारी राजन् होता था। समिति, सभा व मंत्रणा (मंत्रिपरिषद्) नामक जनतांत्रिक संस्थाएँ राज्य कार्य में राजन् का सहयोग करती थीं।

कालान्तर में सहज जनतंत्र वाले राजनैतिक संगठन के स्थान पर भारत का समाज राजतंत्रात्मक राजनैतिक संगठन की तरफ अग्रसर हुआ और भारत में कई जनपद राज्य स्थापित हो गए। ऐसे जनपदों मे ंकुरु, पांचाल, गांधार, कैकय, मद्र, काशी, कलिंग, अंग, मगध, लिच्छवी, मल्ल, अवन्ति, कौशल, शिवि आदि जनपद प्रमुख थे।

(आ) सामाजिक जीवन

(I) वर्ण व्यवस्था– वैदिक काल में समाज में वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी। वर्ण चार माने गये हैं– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यह वर्ण व्यवस्था जन्म आधारित न होकर कर्म आधारित थी, जिसमें व्यक्ति की योग्यता व कायां से उसका वर्ण निर्धारित होता था। इस तरह वर्ण व्यवस्था का प्रारम्भिक स्वरूप बहुत अच्छा था। वह कर्म और श्रम के सिद्धान्त पर आधारित था।

(ii) परिवार– समाज की मूल इकाई परिवार थी। इस काल में संयुक्त परिवार की प्रधानता थी। परिवार में सबसे बड़ा पुरुष मुखिया होता था। उसे गृहपति कहा जाता था। वैदिक समाज में स्त्री का बहुत सम्मान था। पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था। विवाह एक अनुबन्ध न होकर धार्मिक संस्कार था। विवाह परिपक्व अवस्था में ही होता था। पुत्र की भांति पुत्री को भी उच्च शिक्षा का अधिकार था। स्त्री शिक्षा को समुचित सम्मान दिया जाता था। वैदिक साहित्य में ऐसी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है, जो ज्ञान एवं विद्या के लिए प्रसिद्ध थी। गार्गी, मैत्रेयी, गन्धर्वगृहीता आदि विदुषी महिलाएँ इसी युग में हुई।

(iii) आश्रम व संस्कार व्यवस्था– वैदिक काल में सामाजिक संचालन के लिए आश्रम व्यवस्था प्रचलित थी। मनुष्य की आदर्श आयु 100 वर्ष की मानकर जीवन को चार कालों ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम में विभाजित किया गया था यह आश्रम व्यवस्था विश्व में जीवन प्रबन्धन का अनुपम उदाहरण है।

व्यक्ति के जीवन में श्रेष्ठ गुणों को पैदा करने के लिए उस काल में 16 संस्कारों का विधान था जिनमें पुंसवन संस्कार, अन्न प्रासन संस्कार, मुंडन संस्कार, नामकरण संस्कार, विद्यार्जन संस्कार, विवाह

संस्कार आदि प्रमुख संस्कार थे जो सामाजिक संस्कार पद्धत्ति का कार्य करते थे।

(इ) भोजन, वेशभूषा व मनोरंजन– वैदिक काल के लोग भोजन में जौ, गेहूँ, चावल, उड़द, दूध, दही का विशेष प्रयोग करते थे। जहाँ तक वेशभूषा का सवाल है– सूती, ऊनी और रेशमी तीनों तरह के वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था। स्त्री व पुरुष दोनों आभूषण पहनते थे। आभूषणों में कर्ण –फूल, कण्ठहार, कंगन आदि पहने जाते थे।

रथदौड़, घुड़दौड़, शिकार व मल्लयुद्ध मनोरंजन के प्रमुख साधन थे। संगीत व नृत्य लोकप्रिय थे तथा प्रमुख वाद्ययंत्रों में वीणा, बाँसुरी, शंख, झाँझ व मृदंग आदि प्रचलित थे।

(ई) आर्थिक जीवन

(I) कृषि व पशुपालन– वैदिक काल में आजीविका के मुख्य साधन थे– कृषि, पशुपालन, घरेलू उद्योग–धन्धे, व्यापार एवं वाणिज्य। खेती का काम हल –बैल से किया जाता था। गाय, हाथी, घोड़ा, भैंस, हिरण, भेड़, बकरी व गधा प्रमुख पालतू पशु थे। गाय को पवित्र व आर्थिक समृद्धि का केन्द्र मानते थे। गायों की संख्या उन्नति का एक पैमाना था।

(ii) उद्योग व व्यापार–उद्योग धन्धों में लकड़ी, धातु, वस्त्र व चमड़े के काम प्रमुख थे। ऋग्वेद में भिषक नाम से चिकित्सक का उल्लेख भी मिलता है। व्यापार का माध्यम वस्तुओं का लेन–देन था। गाय को मूल्य की इकाई माना जाता था। ऋग्वेद में निष्क नामक सोने के सिक्के के संकेत मिलते हैं। यह न केवल उन्नत धातु विज्ञान की जानकारी का प्रमाण है अपितु यह आधुनिक मुद्रा व्यवस्था का प्रारम्भिक संकेत भी है। दूर देशों व भारत के बीच जल व थल दोनों मार्गों से व्यापार होता था। वस्त्र उद्योग काफी उन्नत था। वस्त्रों से विदेशी व्यापार होने के प्रमाण भी उपलब्ध है।

(उ) धार्मिक जीवन– वैदिक युग के निवासी मूलतः प्रकृति के उपासक थे और विभिन्न देवीय शक्तियों की उपासना करते थे। जिन प्राकृतिक शक्तियों से उन्हें जीवन शक्ति व प्रेरणा प्राप्त होती थी, उनको उन्होंने अपने देवता के रूप में स्वीकार कर लिया था। इनमें इन्द्र, सूर्य, अग्नि, वायु, ऊषा, वरुण प्रमुख थे। प्रार्थना, स्तुति व यज्ञों द्वारा वे देवताओं को प्रसन्न करते थे। उनका धार्मिक जीवन सरल व आडम्बर रहित था। वैदिक काल के अन्त में उपनिषदों ने ज्ञान का मार्ग प्रतिपादित किया था।

3. मेसोपोटामिया की सभ्यता

मेसोपोटामिया युनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है– दो नदियों के बीच की भूमि । इस देश का आधुनिक नाम ईराक है। इस प्रदेश को दजला और फरात नदियाँ सींचती हैं। मेसोपोटामिया को इसकी अर्द्धचन्द्र सी आकृति तथा खेती की दृष्टि से अत्यधिक उर्वर होने के कारण 'उपजाऊ अर्द्धचन्द्र भी कहा गया है। प्राचीनकाल में इस प्रदेश का दक्षिणी भाग 'सुमेर' कहलाता था जो मेसोपोटामिया की सभ्यता का मुख्य केन्द्र था। सुमेर के उत्तर–पूर्व की तरफ के भाग को बाबुल (बेबीलोन) तथा अक्कद कहते थे और उत्तर की ऊँची भूमि असीरिया कहलाती थी।

मेसोपोटामिया के राज्यों का उत्थान और पतन

कालान्तर में उत्तर के पर्वतीय प्रदेशों से आए सुमेरियन लोग मेसोपोटामिया में बस गए और उन्होंने एक अत्यन्त समृद्ध सभ्यता का विकास किया। सुमेरियन लोगों ने नगर राज्य की सरकार स्थापित की। उर, लगाश, एरेक तथा एरिडू प्रसिद्ध नगर राज्य थे। 2500 ई.पू. लगभग सार्गॉन प्रथम ने, जो अक्कद से आया था, सुमेरियन लोगों को जीत लिया। सुमेर और अक्कद दोनों राज्यों को मिलाकर उसने एक सुदृढ़ राज्य स्थापित किया, किन्तु 2100 ई.पू. के लगभग ये अक्कादियन लोग भी पराजित हो गए। बाबुल या बेबीलोन में एक नए सामी राजवंश का उदय हुआ। बेबीलोन नगर अब इस नए साम्राज्य की राजधानी बन गया। बेबीलोनिया के सबसे प्रसिद्ध सम्राट हम्मूराबी ने विभिन्न नगर राज्यों में होने वाली लड़ाइयों को रोककर तथा समस्त देश में एक जैसे कानून लागू कर एक दृढ़ राज्य स्थापित किया।

बेबीलोनिया की सभ्यता भी सुमेरियन सभ्यता पर आधारित थी। इसके अनन्तर मेसोपोटामिया में असीरियाई लोगों ने अपना साम्राज्य (लगभग 1100 से 612 ई.पू.) स्थापित किया। असीरियाई लोगों ने सीरिया, फिलस्तीन फिनिशिया आदि प्रदेशों को जीतकर विशाल साम्राज्य स्थापित किया। इसके बाद काल्डियाई लोगों ने असीरियाई लोगों को पराजित कर एक दूसरे शक्तिशाली बेबीलोनियन साम्राज्य (612 ई.पू. से 539 ई.पू.) का निर्माण

किया, किन्तु 539 ई. पूर्व उन्हें पारसियों के हाथों पराजित होना पड़ा। सुमेरिया, बेबीलोनिया, असीरिया तथा कोल्डिया की सभ्यताओं को समग्र रूप में मेसोपोटामिया की सभ्यता के नाम से जाना जाता है।

मेसोपोटामिया सभ्यता की विशेषताएँ

(i) हम्मूराबी की विधि संहिता –

बेबीलोन के सम्राट हम्मूराबी ने अपनी प्रजा के लिए एक विधि संहिता बनाई थी जो इस समय उपलब्ध सबसे प्राचीन विधि संहिता है। सम्राट ने इसे एक 8 फुट ऊँची पत्थर की शिला पर उत्कीर्ण कराया था। हम्मूराबी का दण्ड विषयक सिद्धान्त यह था कि ''जैसे को तैसा और खून का बदला खून।''

(ii) मेसोपोटामिया का सामाजिक जीवन–

मेसोपोटामिया सभ्यता में राजा पृथ्वी पर देवताओं का प्रतिनिधि माना जाता था। राजा व राजपरिवार के बाद दूसरा स्थान पुरोहित वर्ग का था जो संभवतः राजतंत्र की प्रतिष्ठा से पूर्व शासक रहे थे। मध्यम वर्ग में व्यापारी जमींदार एवं दुकानदार थे। समाज में दासों की स्थिति सबसे नीचे थी। लगातार युद्ध होते रहने के कारण समाज में सेना का महत्वपूर्ण स्थान था।

(iii) आर्थिक जीवन–

(अ) कृषि व पशुपालन – इस सभ्यता के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि था। वहाँ के किसान भूमि की जुताई हलों से करते थे और बीज एक कीप द्वारा बोते थे। खेतों की सिंचाई के लिए वे नदियों के बाढ़ के पानी को नहर द्वारा ले जाकर बड़े–बड़े बाँधों में इकट्ठा कर लेते थे। हलों से जुताई हेतु मवेशी काम में लेते थे और उनकी नस्ल सुधार के लिए पशुओं का प्रजनन भी किया जाने लगा था।

(आ) व्यापार व उद्योग– मेसोपोटामिया की सभ्यता मूलतः एक व्यावसायिक सभ्यता थी। वहाँ देवता का मंदिर एक धार्मिक स्थल ही नहीं एक व्यावसायिक केन्द्र भी था। यहीं सर्वप्रथम बैंक प्रणाली का विकास हुआ। मेसोपोटामिया का भारत की सिन्धु–सरस्वती सभ्यता से व्यापारिक सम्बन्ध था। सिन्धु–सरस्वती सभ्यता की कई वस्तुएँ मेसोपोटामिया के उर नगर की खुदाई में मिली हैं।

(iv) धार्मिक मान्यताएँ–

मेसोपोटामिया के लोग अनेक देवताओं में विश्वास करते थे। प्रत्येक नगर का अपना संरक्षक देवता होता था। उसे 'जिगुरात' कहते थे जिसका अर्थ है ''स्वर्ग की पहाड़ी'। उर नगर मेसोपोटामिया के सबसे बड़े नगरों में से था । उर नगर में जिगुरात का निर्माण एक कृत्रिम पहाड़ी पर ईंटों से हुआ था। उर के 'जिगुरात में तीन मंजिलें थी और उसकी ऊँचाई 20 मीटर से अधिक थी। मेसोपोटामिया के लोग परलोक की अपेक्षा इस लोक के जीवन में अधिक रुचि रखते थे। उनका ध्यान इस लोक के जीवन की व्यावहारिक समस्याओं पर केन्द्रित था। उनके पुरोहित भी व्यवसाय में रत रहते थे

(v) ज्ञान–विज्ञान–

विज्ञान के क्षेत्र में मेसोपोटामिया के लोगों की उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण थीं। खगोल विज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने काफी उन्नति कर ली थी। उन्होंने सूर्योदय, सूर्यास्त तथा चन्द्रोदय और चन्द्रास्त का ठीक समय मालूम कर लिया था । उन्होंने दिन और रात्रि के समय का हिसाब लगाकर पूरे दिन को 24 घण्टों में बाँटा था । साठ सैकेण्ड का मिनट और साठ मिनट के एक घण्टे का विभाजन सबसे पहले इन्होंने ही किया। रेखागणित के वृत्त को उन्होंने 360° डिग्री में विभाजित करना प्रारम्भ किया था। इस तरह मेसोपोटामिया के निवासी विज्ञान और गणित की उन्नत परम्पराओं से अवगत थे।

(vi) स्थापत्य कला–

मेसोपोटामिया के कलाकारों ने मेहराब का भी आविष्कार किया। मेहराब स्थापत्य कला की एक महत्वपूर्ण खोज थी क्योंकि यह बहुत अधिक वजन सम्भाल सकती थी और देखने में आकर्षक लगती थी

(vii) कीलाक्षर लिपि–

मेसोपोटामिया की पहली लिपि का विकास सुमेर में हुआ। सुमेरियन व्यापारियों ने अपना हिसाब–किताब रखने के लिए कीली जैसे चिह्न बनाकर लेखन कला का विकास किया। इसे कूनीफार्म या कीलाक्षर कहते हैं।

4. मिस्र की सभ्यता

मिस्र की सभ्यता का विकास नील नदी की घाटी में हुआ था। अफ्रीका के लोग नील नदी को गंगा की भांति पवित्र मानते थे, क्योंकि प्राचीनकाल में मिस्र के सुख और समृद्धि का कारण नील नदी ही रही है। मिस्र की सभ्यता बहुत प्राचीन थी।, किन्तु, इसके सन्तोषजनक प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं। प्रामाणिक आधार पर मिस्र के राजनैतिक इतिहास का ज्ञान 3400 ई.पू. से ही प्राप्त होता है। मिनीज नाम शासक ने 3400 ई.पू. ही मिस्र

का राजनैतिक ढांचा खड़ा किया था। इथियोपी , नूबी एवं नीलियम जाति के लोगों ने इस सभ्यता का निर्माण किया था। मिस्र की सभ्यता के इतिहास में पिरामिड़ युग, सामन्तशाही युग एवं साम्राज्यवादी युग विशेष उल्लेखनीय है। इनमें से पिरामिड़ युग सर्वाधिक गौरवपूर्ण था।

मिस्र सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँः–

(i) मिश्र का सामाजिक जीवन–

मिस्र के शासक फराओं कहलाते थे और प्रजा पर उनकी सत्ता निरंकुश थी। लोग उसे ईश्वर का प्रतिनिधि मानते थे। उच्च वर्ग में सामन्त व पुरोहित, मध्यवर्ग में व्यापारी, व्यवसायी तथा निम्न वर्ग में कृषक तथा दास थे। स्त्री व पुरुषों में लगभग उच्च वर्ग के लोग आभूषण पहनते थे। संगीत ,नृत्य, नटबाजी, पशु, जुआ आदि उनके मनोरंजन के साधन थे। हाथीदाँत जड़ित मेज और कुर्सियाँ तथा बहुमूल्य पर्दे व कालीन सामन्तों के भवनों की शोभा बढ़ाते थे।

(ii) आर्थिक जीवन

(अ) कृषि व पशुपालन– मिस्र के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। जौ, प्याज, बाजरा व कपास की खेती की जाती थी। मिस्र को प्राचीन विश्व का ''अन्न का भण्डार कहा जाता था, क्योंकि वहाँ वर्ष में तीन बार फसलें बोयी जाती थी। बकरी, गधा, कुत्ता, गाय, ऊँट, सूअर आदि पालतु पशु थे।

(आ) व्यापार व उद्योग – मिश्र में धातु, लकड़ी, मिट्टी, काँच कागज तथा कपड़े का काम करने वाले कुशल कारीगर थे। मिस्रवासियों को ताम्बे के अतिरिक्त अन्य धातुएँ बाहर से मंगवानी पड़ती थीं। मिस्रवासी लकड़ी पर नक्काशी तथा काँच पर चित्रकारी कार्य से भी अवगत थे। वे वस्तु विनिमय द्वारा व्यापार करते थे। अरब व इथोपिया से उनके व्यापारिक सम्बन्ध थे।

(iii) धार्मिक जीवन– मिश्रवासियों के प्रमुख देवता रा (सूर्य), ओसरिम (नील नदी) तथा सिन (चन्द्रमा) थे। उनके देवता प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक थे। सभ्यता के प्रारम्भिक काल में मिश्रवासी बहुदेववादी थे किन्तु साम्राज्यवादी युग में अखनाटन नामक फराओ ने एकेश्वरवाद की विचारधारा को महत्व दिया तथा सूर्य की उपासना आरम्भ की।

(iv) ज्ञान–विज्ञान– मिश्र के लोगों ने तारों व सूर्य के आधार पर अपना कलेण्डर बना लिया था तथा वर्ष के 360 दिन की गणना कर ली थी। मिस्रवासियों ने धूप घड़ी का आविष्कार कर लिया था। उन्होंने अपनी वर्णमाला विकसित करके पेपीरस वृक्ष से कागज का निर्माण भी किया था।

(v) पिरामिड –मिस्रवासियों का विश्वास था कि मृत्यु के बाद शव में आत्मा निवास करती है। अतः वे शव पर एक विशेष तेल का लेप करते थे। इससे सैकड़ों वर्षों तक शव सड़ता नहीं था। शवों की सुरक्षा के लिए समाधियां बनाई जाती थी जिन्हें वे लोग पिरामिड कहते थे। पिरामिडों में रखे शवों को 'ममी' कहा जाता था।

गिजे का पिरामिड

मिश्र के पिरामिडों में गिजे का पिरामिड प्राचीन वास्तुकला की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है। गिजे का यह पिरामिड 481 फीट ऊँचा तथा 755 फीट चौड़ा है। इसमें ढाई–ढाई टन के 23 लाख पत्थर के टुकड़े लगे है। इसके बाहर पत्थर की एक विशालकाय नृसिंह की मूर्ति जिसे स्फिक्स कहा जाता है, बनी है। पिरामिड मिश्रवासियों के गणित व ज्यामिति के ज्ञान के साक्षी है। मिश्र में अब भी ऐसे कई पिरामिड विद्यमान है।

5. चीन की सभ्यता

चीन की प्राचीन सभ्यता हवांग्हो और चांग जियांग (याग्टीसीक्यांग) नदियों की घाटियों में विकसित हुई थी। चीनी लिपि आरम्भ में चित्रात्मक थी। धीरे –धीरे इसकी स्वयं की वर्णमाला का निर्माण हुआ। मंगोल जाति के लोगों ने इस सभ्यता को जन्म दिया एवं विकास में सहयोग दिया। उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यों के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर चीन का व्यवस्थित राजनैतिक इतिहास ई.पू. 2852 से फूसी नामक शासक से प्रारम्भ होता है। चीन के शासकों के राजवंशों में शांग वंश, चाऊ वंश, हान वंश, सुई वंश, तांग वंश, शुंग वंश प्रमुख थे।

चीनी सभ्यता की विशेषताएँ

(I) सामाजिक जीवन – चीन का प्राचीन समाज मंडारिन, कृषक, कारीगर, व्यापारी तथा सैनिक वर्ग में विभाजित था। सेना में भर्ती होने वाले लोग या तो अत्यन्त निर्धन, अपरिश्रमी या समाज में अवांछनीय चरित्र के माने जाने वाले होते थे। एच.ए. डेविस का कथन है कि ''प्राचीन

सभ्यताओं में चीन ही एक देश है जो शांति के लिये संगठित रहा तथा वहां सैनिक होना अपमानजनक समझा जाता था।

चीनी सभ्यता में संयुक्त परिवार की प्रथा थी। परिवार का मुखिया वयोवृद्ध व्यक्ति होता था। वहाँ के जीवन में नैतिकता पर विशेष बल था। समाज में स्त्रियों को कोई गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं था। पर्दा प्रथा व तलाक प्रथा भी प्रचलित थी।

(ii) आर्थिक जीवन

(अ) कृषि व पशुपालन– चीनी लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। चावल की खेती तथा चाय की खेती बहुतायत से की जाती थी। नहरों द्वारा सिंचाई होती थी। भेड़, सुअर, गाय, बैल, कुत्ते आदि पालतु पशु थे।

(आ) व्यापार उद्योग– चीनी हस्तकला एवं उद्योग के अन्तर्गत रेशम तैयार करना और कपड़ा बुनना प्रमुख था। अन्य महत्वपूर्ण उद्योग चीनी मिट्टी के बर्तन बनाना था। चीन से नमक, मछली, लोम (फर), सूती तथा रेशमी कपड़ों का व्यापार बड़े पैमाने पर होता था । प्राचीन बेबीलोन, मिस्र एवं भारत से चीनी लोग विभिन्न वस्तुओं का व्यापार करते थे।

(iii) धार्मिक जीवन– चीनी लोग प्रकृति के उपासक थे। वे सूर्य, आकाश, पृथ्वी, वर्षा की पूजा करते थे। चीन में राजा को परमात्मा का पुत्र माना जाता था। वे जादू–टोना, बलि आदि में भी विश्वास करते थे। कालान्तर में चीनवासियों की धार्मिक विचारधारा कन्फ्यूशियस के सुधारवादी ऐकेश्वरवाद एवं लाओत्से की शाश्वत आत्मा के "ताओवाद' तथा बुद्ध धर्म से प्रभावित हुई।

(iv) ज्ञान–विज्ञान – प्राचीन चीन में ज्ञान–विज्ञान की खूब उन्नति हुई । कागज, छापाखाना, स्याही, बारूद, चित्रकला तथा दिशासूचक यंत्र का आविष्कार सर्वप्रथम चीन में ही हुआ था। कन्फ्यूशियस और लाओत्से चीन के महान विचारक थे। लीयो वहाँ का प्रसिद्ध कवि था।

(v) चीन की दीवार – चीन की दीवार प्राचीन चीनी स्थापत्य कला का विश्वप्रसिद्ध नमूना है। इसका निर्माण चीन के शासक शीहवांगती द्वारा हूणों के निरन्तर आक्रमणों से रक्षा के लिए करवाया था । यह दीवार 1800 मील लम्बी व 20 फीट चौड़ी व 20 फीट ऊँची है। इस दीवार पर थोड़ी–थोड़ी दूरी पर बुर्ज जैसे छोटे–छोटे किले बने हुए हैं।

चीन की दीवार

6. युनान की सभ्यता

सभ्यता के विकास की दृष्टि से युनान पहला यूरोपीय देश था। इतिहासकारों का मत है युनान के आदिनिवासी माओनियम लोगों को पराजित करके उन्हें गुलाम बना लिया था। उन्होंने अपने मौलिक चिन्तन तथा निष्ठा से एक महान सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माण किया। अनुमान है कि युनानी सभ्यता का जन्म 1500 ई. पू. हुआ था।

विभिन्न पहाड़ों और खाइयों के कारण प्राचीन युनानी लोग कभी भी एक संयुक्त राष्ट्र स्थापित नहीं कर पाए। सम्पूर्ण युनान में कई नगर–राज्यों में दो प्रमुख नगर राज्य स्पार्टा और एथेंस थे। स्पार्टा में सैनिक शासन था तथा एथेंस में लोकतंत्र। शेष युनानी नगर राज्य या तो एथेंस की तरह थे अथवा स्पार्टा का अनुसरण करते थे।

युनानी सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ

(i) स्पार्टा का जीवन – स्पार्टा नगर राज्य को सदैव पड़ौसी देशों के आक्रमण का भय बना रहता था। इसलिये वहाँ सैनिक शासन स्थापित हुआ। वहाँ का शासन स्वेच्छाचारी था। स्पार्टा का प्रथम व्यवस्थापक एवं विधान निर्माता लाइकर्मस था। उसने वहाँ के निवासियों के लिए कठोर अनुशासन में रहने की व्यवस्था की थी। बच्चों को कठिनाइयों का सामना करने की शिक्षा दी जाती थी। निर्बल बच्चों को टेसिटस पहाड़ी की चोटी से गिराकर मार दिया जाता था।

स्पार्टा को साहसी एवं योद्धा सैनिक और आँखें मूँदकर आज्ञापालन करने वाले नागरिक तैयार करने में तो निश्चय ही सफलता मिली किन्तु दर्शन, साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में स्पार्टा की देन नही के बराबर है।

(ii) एथेन्स का जीवन

एथेन्स का नगर राज्य स्पार्टा के नगर राज्य से सर्वथा भिन्न था । एथेंस में जनतांत्रिक शासन था। राजा का बहुत सम्मान था। न्यायाधीश ड्रेको ने 621 ई.पू. लिखित कानूनों का संग्रह तैयार किया था। उसके कानून उच्च वर्ग के हितों की रक्षा करने वाले थे। तत्पश्चात् क्लाईस्थनीज

ने एथेंस में जनतंत्र की जड़ें जमा दीं। ईरान के महत्वकांक्षी सम्राट दारा ने ग्रीक को जीतने के बाद युनान पर आक्रमण किया । एथेंस व ईरानियों के मध्य मैराथन मैदान में युद्ध हुआ। इस युद्ध में युनान की विजय हुई और युनानियों ने अपनी सभ्यता का स्वतंत्रतापूर्वक विकास किया।

(iii) पेराक्लीज युग – पेराक्लीज युनान (एथेंस) का महान जनतांत्रिक नेता था। पेराक्लीज ने अपने सुधारों के द्वारा एथेन्स के प्रजातंत्र को व्यापक एवं सुदृढ़ बनाया। पेराक्लीज का मत था कि सारे व्यक्तियों को न्याय का समान अधिकार है। उसके शासनकाल में कला, साहित्य, संगीत तथा दर्शन का बहुत विकास हुआ। एथेंस में दुखान्त व सुखान्त नाटकों तथा संगीत के कई आयोजन होते थे। होमर की विश्व प्रसिद्ध रचनाएँ इलियट व ओडेसी इसी काल की थी। उसके समय में गणित, ज्योतिष व दर्शन की शिक्षा दी जाती थी। इसी काल में विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात ने ज्ञान व चरित्र के विकास पर बल दिया। दार्शनिक प्लेटो व अरस्तु भी इसी काल के विद्वान थे। देवी एथिना का मंदिर भवन निर्माण कला का अनुपम नमूना है। हिरोडोटस व थ्यूसीडिडीज इस युग के महान् इतिहासकार थे। पाईथोगोरस तथा हिपोक्रेटीज इस काल के प्रसिद्ध गणितज्ञ थे। इन्हीं उपलब्धियों के कारण पेराक्लीज के युग को युनान के इतिहास में स्वर्ण युग कहा जाता है। प्रोफेसर डेविड के अनुसार "पेराक्लीज का युग, युनान के इतिहास का ही नहीं वरन् विश्व के इतिहास का स्वर्ण युग था।

7. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ

(I) कालीबंगा –उत्तरी राजस्थान में घग्घर नदी के किनारे सिन्धु– सरस्वती सभ्यता के 25 स्थल खोजे गये हैं जिनमें से कालीबंगा एक है। यह स्थल हनुमानगढ़ जिले में सरस्वती (घग्घर) के तट पर 4500 वर्ष पहले बसा हुआ था। कालीबंगा में मुख्य रूप से नगर योजना के दो टीले प्राप्त हुए हैं। इनमें एक पूर्वी टीला है, जहाँ से साधारण बस्ती के साक्ष्य मिले हैं। पश्चिमी टीले में दुर्ग हैं जिसके चारों और सुरक्षा प्राचीर है।

दोनों टीलों के चारों ओर भी सुरक्षा प्राचीर बनी हुई थी। कालीबंगा में जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं, जो संसार में प्राचीनतम है। दीवारें ईंटों से बनती थी और इन्हें मिट्टी (गारे) से जोड़ा जाता था। जिससे दीवारें मजबूत व टिकाऊ बन जाती थीं। व्यक्तिगत और सार्वजनिक नालियाँ तथा कूड़ा डालने के मिट्टी के बर्तन नगर की सफाई की असाधारण व्यवस्था के अंग थे।

वर्तमान में यहाँ घग्घर नदी बहती है जो प्राचीनकाल में सरस्वती के नाम से जानी जाती थी। यहाँ से धार्मिक प्रमाण के रूप में अग्निवेदियों के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ सम्भवतः धूप में पकाई गई ईंटों का प्रयोग किया जाता था। यहाँ से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों और मुहरों पर जो लिपि अंकित पाई गई है वह सैन्धव लिपि है जिसे अभी पढ़ा नहीं जा सका है। कालीबंगा से पानी के निकास के लिए लकड़ी व ईंटों की नालियाँ बनी हुई मिली हैं। ताम्र से बने कृषि के कई औजार भी यहाँ की आर्थिक उन्नति के परिचायक हैं। कालीबंगा की नगर योजना सिन्धु घाटी की नगर योजना के अनुरूप है। कालीबंगा के निवासियों की मृतक के प्रति श्रद्धा तथा धार्मिक भावनाओं को व्यक्त करने वाली तीन समाधियाँ मिली हैं। इस समृद्ध सभ्यता के ह्रास कारण संभवतः सूखा, नदी मार्ग में परिवर्तन इत्यादि माने जाते हैं।

(ii) आहड़– वर्तमान उदयपुर जिले में स्थित आहड़ दक्षिण–पश्चिम राजस्थान की कांस्ययुगीन संस्कृति का मुख्य केन्द्र था । यह संस्कृति बेड़च बनास की घाटियों में विकसित हुई थी। यह संस्कृति पाँच हजार वर्ष पुरानी है। विभिन्न उत्खनन के स्तरों से पता चलता है कि प्रारम्भिक बसावट से लेकर 18वीं सदी तक यहाँ कई बार बस्तियाँ बसी और उजड़ी। ऐसा लगता है कि आहड़ के आस–पास तांबे की उपलब्धता होने से सतत रूप में इस स्थान के निवासी इस धातु के उपकरणों को बनाते रहे और उसे एक ताम्रयुगीन कौशल केन्द्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग 500 मीटर लम्बे धूलकोट का टीला आहड़ सभ्यता का प्रमुख केन्द्रीय स्थान था। ताम्बे की कुल्हाड़ियाँ प्रस्तर के औजार, अर्धकीमती प्रस्तर की वस्तुएँ आदि सामग्री यहाँ से प्राप्त हुई है।

यहाँ नगर योजना के अन्तर्गत मकानों की योजना में आँगन या गली या खुला स्थान रखने की व्यवस्था थी। एक मकान में 4 से 6 बड़े चूल्हों का होना आहड़ में वृहत् परिवार या सामूहिक भोजन बनाने की व्यवस्था पर प्रकाश डालते हैं। आहड़ से खुदाई से प्राप्त बर्तनों तथा अनेक खंडित टुकड़ों से हमें उस युग में मिट्टी के बर्तन बनाने की कला का अच्छा परिचय प्राप्त होता है।

इस आहड़ संस्कृति की व्यापकता एवं विस्तार गिलूँड, बालाथल, बागौर तथा अन्य आसपास के पुरातात्विक स्थानों से प्रमाणित है। इसका सम्पर्क नवदाटोली, नागदा, एरन, कायथा तथा उत्तर गुजरात में कच्छ तक अर्थात् इस सभ्यता का सम्पर्क चार हजार वर्ष पुरानी सभ्यता से भी था, जो यहाँ

से प्राप्त काले व लाल मिट्टी के बर्तनों के आकार, उत्पादन व कौशल की समानता से पता चलता है।

(iii) बालाथल

उदयपुर नगर से पूर्व में 42 किलोमीटर दूर ऊँठाला गाँव वर्तमान में वल्लभनगर नाम से बसा हुआ है। यह उपखण्ड मुख्यालय है। इसके उत्तर में बालाथल गाँव है। इस गाँव की पूर्वी दिशा में एक टीला है। इस टीले के उत्खनन का कार्य मार्च 1993 में डक्कन कॉलेज, पूना के डॉ. वी.एन. मिश्रा के नेतृत्व में डॉ. वी. एस. शिन्दे, डॉ. आर.के. मोहन्ती तथा इन्स्टिट्यूट ऑफ राजस्थान स्टडीज, राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर के डॉ. देव कोठारी, डॉ. ललित पाण्डे एवं डॉ. जीवन खरकवाल की देख–रेख में किया गया। यहाँ पर उत्खनन कार्य 7 वर्षों तक किया गया। यहाँ ताम्र–पाषाण युग की संस्कृति के दर्शन होते हैं। वैसे यह स्थल आहड़ का ही एक विस्तार है। यह सभ्यता लगभग 3200ई. पू. तक अस्तित्व में आ चुकी थी।

बालाथल की विशेषताएँ

(अ) ताम्र–उपकरण– बालाथल के निवासी तांबे से बने हुए उपकरणों और अस्त्रों का प्रयोग करते थे। इनमें कुल्हाड़ी, चाकू,छैनी, उस्तरा तथा बाण के फलक का प्रयोग करते थे। पत्थर के बने हुए औजार भी मिले हैं। इसका कारण यहाँ के लोगों को ताम्बा सुगमता से उपलब्ध होना माना जा सकता है।

बालाथल निवास के अवशेष

(आ) मिट्टी के बर्तन– बालाथल से प्राप्त विशेष आकार–प्रकार के चमकदार मिट्टी के बर्तन दो प्रकार के हैं– एक खुरदरी दीवारों वाले तथा दूसरे चिकनी मिट्टी की दीवारों वाले। काले, लाल और गहरे लाल रंग लिये ऐसे बर्तनों के बाहर और भीतर चमकदार लेप किया हुआ मिलता है। काले तथा लाल बर्तनों पर सामान्यतः सफेद रंग के चित्र मिलते हैं। यहाँ विशेष प्रकार के बर्तन बनाए ही नहीं जाते थे, अपितु अन्य क्षेत्रों को निर्यात भी किये जाते थे।

(इ) निर्माण कार्य

बालाथल के टीले के मध्य में एक विशाल दुर्ग स्वरूप संरचना खोजी गई जिसकी दीवारें 3.15 मीटर ऊँची तथा लगभग 5 मीटर मोटी हैं, यह दुर्ग 5600 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैला था। यह दुर्ग मिट्टी तथा पत्थरों से बनाया गया। बालाथल की खुदाई में ग्यारह कमरों के बड़े भवन की रचना भी प्राप्त होती है जो ताम्रपाषाण काल की द्वितीय अवस्था में निर्मित हुए थे। जिस प्रकार आहड़ की ताम्रपाषाण काल की सभ्यता में ताम्बा गलाने की भट्टियों के अवशेष मिले हैं, उसी प्रकार बालाथल में लोहा गलाने की भट्टियों के अवशेष मिलें हैं। आहड़ सभ्यता के लोग दक्षिणी राजस्थान के पहले किसान, पशुपालक, मिट्टी के बर्तन बनाने वाले तथा धातु के औजारों के निर्माता थे।

(iv) चन्द्रावती

सिरोही जिले में माउण्ट आबू की तलहटी में आबू रोड़ के निकट चन्द्रावती के नाम से एक प्राचीन शहर के अवशेष हैं। यह प्राचीन शहर सेवाणी नदी के दायें तट पर बसा हुआ था तथा लगभग 50 हेक्टेयर के क्षेत्र में फैला हुआ था। इसकी खोज सन् 1822 में कर्नल जेम्स टॉड द्वारा की गई। सन् 1980 में महाराजा सियाजीराव गायकवाड़ विश्वविद्यालय, बड़ौदा के पुरातत्व विभाग द्वारा इस प्राचीन शहर तथा सम्बद्ध क्षेत्र का गहन सर्वेक्षण किया गया।

चन्द्रावती

सन् 2013 एवं 2014 में इंस्टिट्यूट ऑफ राजस्थान स्टडीज (साहित्य संस्थान) जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय , उदयपुर एवं राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में डॉ. जीवन खरकवाल के नेतृत्व में चन्द्रावती का पुरातात्विक उत्खनन किया गया। शहर के पश्चिमी भाग में एक विशाल किले के अवशेष हैं, जो लगभग 26 बीघा में फैला है। मध्य भाग में 33 मन्दिर समूहों के अवशेष हैं, जो हिन्दू तथा जैन धर्म से सम्बंधित हैं। अधिकांश मन्दिर ईंटों

द्वारा निर्मित ऊँची जगती पर निर्मित हैं। यहाँ से बड़ी संख्या में प्राप्त मूर्तियाँ माउण्ट आबू संग्रहालय में सुरक्षित हैं। स्थापत्य के दृष्टिकोण से इन्हें 8वीं से 15 वीं शताब्दी के मध्य रखा जा सकता है। उत्खनन में शहर के पूर्वी भाग में दो किले खोजे गये हैं, इनमें से एक किला वर्गाकार हैं तथा 60′x 60′ मीटर क्षेत्र में फैला है। इसमें आयताकार तथा गोल बुर्ज बनाकर सुरक्षा दीवार को मजबूती प्रदान की गई है।

उत्खनन में तीन विशाल भवनों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। एक कमरे में बड़ी संख्या में विभिन्न प्रकार के अनाजों के जले हुए बीज तथा अनाज पीसने की घट्टी का भाग भी खोजा गया। भवनों में घोड़े व मनुष्यों की मृण मूर्तियाँ, मिट्टी व लोहे की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। सभी भवन व फर्श ईंटों के बने हुए थे।

किले के प्रवेश द्वार पर संवत् 1325 का एक अभिलेख भी मिला है। चन्द्रावती के अभिलेख तथा ताम्रपत्र माउण्ट आबू संग्रहालय में सुरक्षित हैं। यह परमार शासकों की राजधानी थी, जिनमें यशोधवल तथा धारा वर्ष जैसे प्रतापी राजा हुए हैं। परमारों के पश्चात् इस स्थल पर चौदहवीं शताब्दी में देवड़ा राजपूतों का अधिकार हो गया तथा 15वीं शताब्दी में आक्रमणों के कारण यह नगर ध्वस्त हो गया।

चन्द्रावती के उपर्युक्त अवशेषों के नीचे एक अन्य प्राचीन बस्ती के अवशेष भी हैं। यह उत्खनन से स्पष्ट हुआ है उपलब्ध पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर यह बस्ती छठी से नवीं शताब्दी के बीच की हो सकती है।

चन्द्रावती के क्षेत्र से पाषाणकालीन उपकरण तथा शैलचित्र भी मिले हैं। अतः यह स्पष्ट है कि पाषाणकाल से ही मानव समाज चन्द्रावती में उपस्थित था। मध्यकाल में यह व्यापार का भी महत्वपूर्ण केन्द्र रहा था।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. सिन्धु व उसकी सहायक नदियों तथा सरस्वती नदी क्षेत्र के मध्य विकसित सभ्यता सिन्धु–सरस्वती सभ्यता का विकास हुआ था।
2. सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के मुख्य स्थल हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा बहावलपुर अब पाकिस्तान में स्थित है। तथा कालीबंगा, राखीगढ़ी, धोलावीरा, रंगपुर, लोथल भारत में है।
3. सिन्धु–सरस्वती सभ्यता नगर नियोजन के लिए प्रसिद्ध थी।
4. मोहनजोदड़ो का अर्थ होता है ''मुर्दों का टीला।''
5. वेद चार हैं– ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद।
6. वैदिक समाज में वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित थी।
7. वैदिक काल का धार्मिक जीवन सरल व आडम्बर रहित था।
8. मेसोपोटामिया युनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है– दो नदियों के बीच की भूमि।
9. मेसोपोटामिया के मन्दिरों (धार्मिक स्थलों) को जिगुरात कहा जाता है।
10. मिस्र की सभ्यता का विकास नील नदी घाटी से हुआ। मिस्र की सभ्यता में गिजे का पिरामिड प्राचीन वास्तुकला की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कला कृति है।
11. चीन की प्राचीन सभ्यता हवांग्हो तथा चांग जियांग– नदियों की घाटी में विकसित हुई थी।
12. चीन की दीवार प्राचीन वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ नमूना है।
13. सुकरात, प्लेटो व अरस्तु युनान के प्रसिद्ध दार्शनिक है।
14. आहड़ सभ्यता ताम्रवती नगरी अथवा धूलकोट के नाम से प्रसिद्ध थी। यह बेड़च (आहड़ नदी) के किनारे बसी हुई थी।
15. कालीबंगा से पूर्व हड़प्पाकालीन और उत्तर हड़प्पाकालीन सभ्यता के साक्ष्य मिले हैं।
16. बालाथल सभ्यता उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील में स्थित है।
17. चन्द्रावती सभ्यता सिरोही जिले में माउण्ट आबू की तलहटी में आबूरोड़ के निकट स्थित है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सिन्धु–सरस्वती सभ्यता का कौनसा पुरातात्विक स्थल पाकिस्तान में है–

   (अ) हड़प्पा (ब) रंगपुर
   (स) कालीबंगा (द) धोलावीरा

2. वैदिक सभ्यता का ज्ञान कराने वाले ग्रंथ कौनसे हैं?

   (अ) वेद (ब) उपनिषद्
   (स) आरण्यक (द) उपर्युक्त सभी

3. मिस्र की सभ्यता कौनसी नदी की घाटी में स्थित है?

   (अ) नील (ब) सिन्धु
   (स) हवांग्हो (द) दजला व फरात

4. विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ इलियड व ओडेसी के रचनाकार थे–

(अ) हीरोडोटस (ब) थ्यूसीडिडीज

(स) होमर (द) पाइथोगोरस

5. जोते गये खेत के प्राचीनतम साक्ष्य कहाँ से मिले हैं?

(अ) कालीबंगा (ब) आहड़

(स) चन्द्रावती (द) मोहनजोदड़ो

6. धूलकोट अथवा ताम्रवती नगरी के नाम से कौनसी सभ्यता प्रसिद्ध है–

(अ) बालाथल (ब) चन्द्रावती

(स) आहड़ (द) सिन्धु

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के दो प्रमुख केन्द्रों का नाम लिखो।
2 मोहनजोदड़ो का क्या अर्थ होता है?
3. आश्रम कौन–कौन से हैं ? नाम बताइये ।
4. मेसोपोटामिया शब्द का क्या अर्थ होता है?
5. उपजाऊ अर्द्धचन्द्र किसे कहा जाता है।
6. पिरामिडों में रखे शवों को क्या कहा जाता था?
7. क्या आर्य भारत के बाहर से आये थे ?
8. चीनी स्थापत्यकला का विश्व प्रसिद्ध नमूना किसको कहा जाता है?
9. कौनसी सभ्यता में सैनिक होना अपमानजनक माना जाता है?
10. युनान की सभ्यता के प्रमुख नगर राज्य कौन–कौनसे थे?
11. आहड़ (बेड़च) नदी के किनारे कौनसी सभ्यता थी?
12. घग्घर नदी का प्राचीन नाम क्या था?
13. माउण्ट आबू की तलहटी में कौनसी सभ्यता के अवशेष मिले है?
14. बालाथल सभ्यता कहाँ स्थित है?
15. कालीबंगा सभ्यता का सम्बन्ध किस सभ्यता से है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. वैदिक सभ्यता के सामाजिक जीवन का वर्णन कीजिए।.
2 सिन्धु सभ्यता के नगरीय जीवन का वर्णन कीजिए।
3. मिस्र की सभ्यता में नील नदी का क्या योगदान है?
4. ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में मेसोपोटामिया की सभ्यता की क्या देन है?
5. स्पार्टा का सैनिक शासन कैसा था? वर्णन कीजिए।
6. युनानी सभ्यता में पेराक्लीज का क्या योगदान है?
7. कालीबंगा से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों का उल्लेख कीजिए।

निबन्धात्मक

1 सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के सामाजिक व धार्मिक जीवन का उल्लेख कीजिए।
2 मेसोपोटामिया की सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. चीनी सभ्यता पर निबन्ध लिखिए ।
4. मिश्र की सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
5. आहड़ सभ्यता का वर्णन कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

(1) अ (2) द (3) अ (4) स (5) अ (6) स